International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 11 Issue 6, Nov.-Dec., 2023, Impact Factor: 7.326

हाड़ौती प्रदेश के कोटा जिले में नगरीकरण की प्रवृत्ति–कोटा नगर का विशेष अध्ययन

डॉ. एच.एन.कोली

आचार्य –भूगोल विभाग, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा (राज.)

किसी प्रदेश की कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या के अनुपात को या इस अनुपात के बढ़ने की प्रक्रिया को नगरीकरण कहते हैं। नगरीकरण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा ग्रामीण जनसंख्या नगरीय जनसंख्या में परिवर्तित हो जाती है, फलतः नगरीय जनसंख्या का अनुपात बढ़ जाता है। नगरीय जनसंख्या का अनुपात कई कारणों से बढ़ता है जैसे –

1. ग्रामीण जनसंख्या के नगरों में स्थानान्तरण से
2. ग्रामीण जनसंख्या में वृद्धि होने, आकार में बड़ा होने तक विविध अर्थव्यवास्थाओं के कारण नगरीय स्तर प्राप्त कर लेने अर्थात ग्रामीण बस्ती के नगरीय हो जाने पर।
3. कानून के तहत समीपी ग्रामीण क्षेत्रों को नगरीय क्षेत्रों में शामिल कर लेने पर तथा ।
4. नगरीय जनसंख्या में अधिक प्राकृतिक वृद्धि होने पर।

भारतीय जनगणना में नगर की परिभाषा में कृषितर जनसंख्या का प्रतिशत तथा जनसंख्या घनत्व को मापदण्ड के रूप में प्रयुक्त किया गया है। सन् 1981 की जनगणना में भारत में निम्न बस्तियों को नगर के अन्तर्गत रखा गया है।

1. वे सभी स्थान जिनमें नगरपालिका, नगर निगम, छावनी बोर्ड या नोटिफाइड टाऊन एरिया कमेटी आदि की स्थानीय प्रशासन की कोई इकाई होती है।
2. अन्य सभी स्थल जो निम्न मापदण्डों को पूरा करते हैं –
    1. 5000 की न्यूनतम जनसंख्या
    2. पुरूषों की क्रियाशील जनसंख्या का 75% या अधिक भाग कृषितर कार्यों में संलग्न हो।
    3. जनसंख्या का घनत्व कम से कम 400 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी हो। नगरीय स्थालों को भारतीय जनगणना में 6 वर्गों में विभक्त किया गया है।

जो संयुक्त राष्ट्र संघ के सुझाव से मेल खाता है।

वर्ग	जनसंख्या
I	1,00,000 से अधिक
II	50,000 – 99,999
III	20,000 – 49,999
IV	10,000 –19,999
V	5,000 – 9,999
VI	5000, से कम

आज विश्व समुदाय के समक्ष अनेक जटिल समस्याएं हैं। यह समस्याएं इतनी जटिल व विशाल है कि इनका अनुमान लगाना आज के बढ़ते हुए सामाजिक विस्तार व विकास में जहां एक ओर जनसंख्या तेजी से बढ़ती जा रही है वही दूसरी ओर इनका जमाव केन्द्र बड़े–बड़े नगर व शहर बनते जा रहे हैं, और भी मुश्किल है।

राजस्थान राज्य का दक्षिणी–पूर्वी भाग हाड़ौती प्रदेश के नाम से जाना जाता हैं। हाड़ौती प्रदेश राजस्थान का एक महत्वपूर्ण औद्योगिक एवं कृषि प्रधान प्रदेश है कोटा शहर न केवल हाड़ौती प्रदेश का वरन् राजस्थान का एक महत्वपूर्ण शहर हैं। कोटा शहर औद्योगिक शैक्षिण व नगरीकरण की दृष्टि से अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। कोटा शहर की जनसंख्या में तीव्र वृद्धि के साथ ही नगरीकरण की

प्रवृत्ति लगातार बढ़ रही है। इस शोध पत्र का उद्देश्य कोटा शहर में नगरीकरण की प्रवत्तियों तथा नगरीय जनसंख्या वृद्धि का अध्ययन करना है। कोटा जिला राजस्थान के दक्षिण पूर्व में स्थित है। इसका विस्तार $23^{0}56^{1}$ से $25^{0}5^{1}$ उत्तरी अक्षांश तथा $75^{0}37^{1}$ से $76^{0}38^{1}$ पूर्वी देशान्तरो के मध्य है। कुल क्षेत्रफल 5,217 वर्ग किमी है। जबकि कोटा शहर $25^{0}13^{1}$ से $25^{0}21^{1}$ उत्तरी आक्षांश तथा $75^{0}52^{1}$ पूर्व से $75^{0}86^{1}$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। यह समुद्र तल से 271 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। (मानचित्र संख्या– 01) कोटा भारत के राजस्थान राज्य के कोटा जिले में स्थित एक नगर है यह चम्बल नदी के किनारे, राज्य की राजधानी जयपुर से 240 किमी दक्षिण में बसा हुआ है। यह कोटा जिले का मुख्यालय है। जयपुर और जोधपुर के बाद राजस्थान का तीसरा बड़ा शहर है।

यह राजस्थान के दक्षिणी–पूर्वी भाग में हाडैती प्रदेश में स्थित है। कोटा शहर की नगरीय सीमा 318 वर्ग किमी. क्षेत्र में फैली हुई है। कोटा शहर की जनसंख्या 1991 में 537371 थी जो बढ़कर 2001 में 694316 तथा 2011 में बढ़कर 1001365 हो गई इसके पुरूष 529795 तथा महिलाएं 471570 हैं। शहर का लिंगानुपात 890 महिलाएं प्रति हजार है।

कोटा शहर में नगरीकरण की प्रवृत्ति :

तालिका संख्या 01 कोटा शहर में नगरीकरण की प्रवृत्ति सन् 1911 से 2011

वर्ष	जनसंख्या	वृद्धि दर
1921	31,707	(–) 3.19
1931	37,876	19.46
1941	47,339	24.98
1951	65,107	76.98
1961	1,20,345	84.84
1971	2,12,991	76.98
1981	3,58,241	68.20
1991	5,37,371	50.00
2001	6,94,316	29.21
2011	10,01365	44.22

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि कोटा शहर में सन् 1921 से 2011 के मध्य निरन्तर नगरीय जनसंख्या में वृद्धि हुई है। कोटा शहर में नगरीकरण राजस्थान के अन्य जिलों की तुलना में सर्वाधिक रहा है। सन् 1921 में कोटा शहर की जनसंख्या मात्र 31,707 थी वह बढ़ कर 1951 में लगभग दुगनी हो गई थी सन् 1951 में कोटा शहर की जनसंख्या 65,107 हो गई थी जो अगले दस वर्षों में ही बढ़ कर लगभग दुगनी 1,20,345 हो गई और 2011 में 1961 के मुकाबले 8 गुना बढ़कर 10,01,365 हो गई है। कोटा शहर की जनसंख्या 2011 में 10 लाख से उपर हो गई हैं। तथा एक अनुमान के अनुसार यह बढ़कर 2021 में 14 लाख हो जायेगी।

कोटा शहर की नगरीय जनसंख्या वृद्धि दर में सन् 1921 से 2011 के मध्य काफी उतार चढ़ाव देखा जा सकता है। किन्तु इसमें वृद्धि की प्रवृत्ति लगातार देखी गई है। जहाँ सन् 1921 में इसमें वृद्धि (–) 3.19 प्रति दस वर्षीय थी। जिसका कारण सन् 1921 के पूर्व देश के कई हिस्सों में पड़े सूखा, अकाल व बाढ़ से राज्य व हाड़ौती प्रदेश का कोटा शहर भी अछूता नही रहा। सन् 1918 के भारी इन्फ्लएन्जा के प्रकोप से बहुत अधिक लोगों की मृत्यु हुई और इसी अवधि में दो वर्ष तक लगातार फसल भी खराब हुई। जनगणना आयुक्त की 1911 एवं 1921 की इन प्राकृतिक आपदाओं पर की गयी टिप्पणियों से पता चलता है कि तत्कालीन भारत में प्राकृतिक प्रकोपों का बहुत अधिक दबाव था। 1931 से लेकर 2011 तक

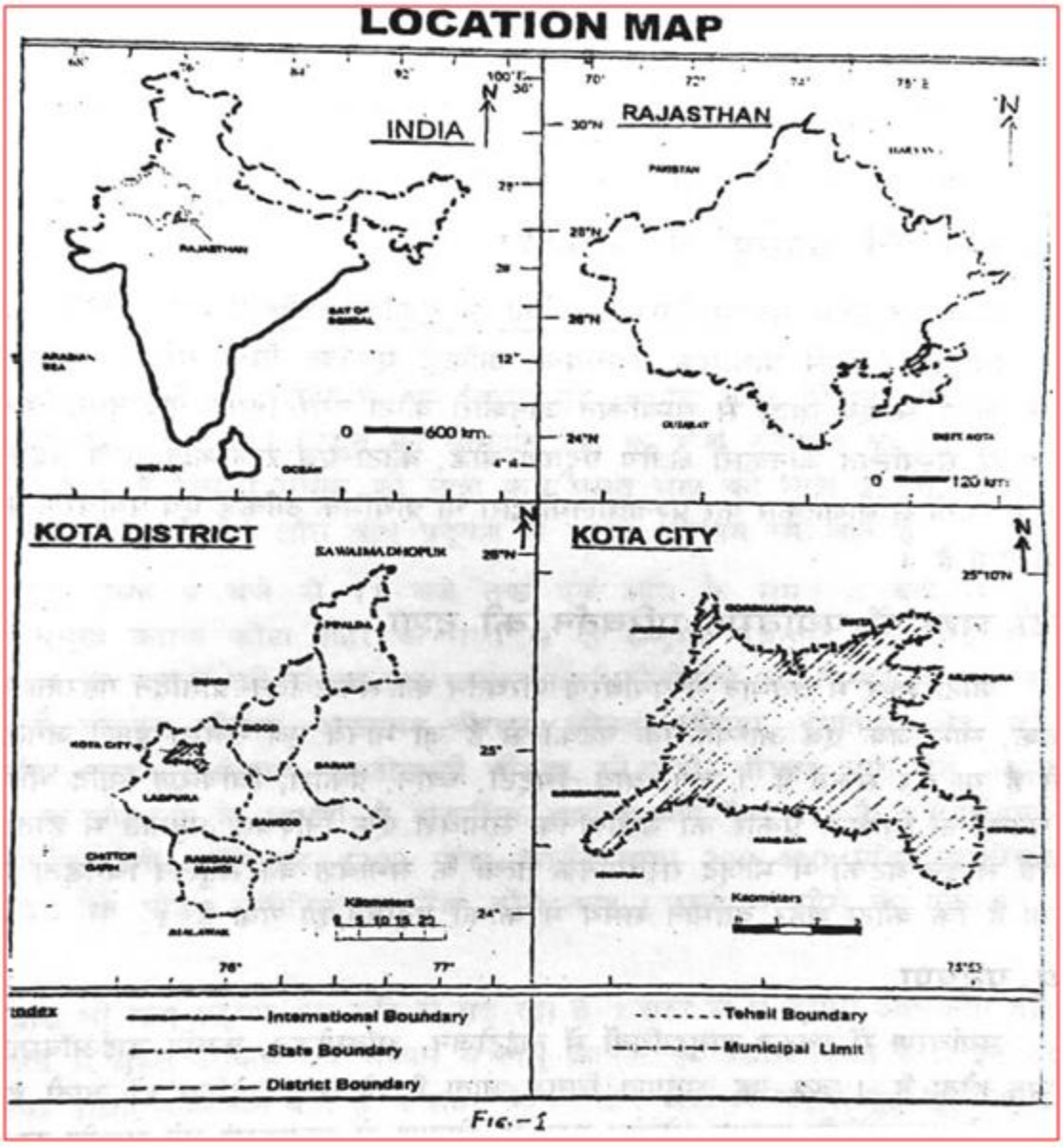

Fig.-1

कोटा शहर की जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि हुई है। तथा वृद्धि दर में भी वृद्धि हुई है। जहाँ 1931 में जनसंख्या वृद्धि दर 19.46 थी वह सन् 1951 में बढ़कर 76.98 प्रतिशत प्रति दसक हो गई। सन् 1961 में वृद्धिदर 84.84 प्रतिशत प्रति दशक रही जो सर्वाधिक रही है। सन् 1971 मे यह 76.98, 1981 मे 68.20, 1991 मे 50.00, 2001 मे 29.21 तथा 2011 मे 44.22 हो गई। सन् 1961 के बाद के वर्षो में शहर की दशकीय वृद्धि दर में कमी आई है जिसका मुख्य कारण परिवार नियोजन तथा जनसंख्या नियंत्रण सम्बंधी प्रयास रहे हैं।

तालिका संख्या 02

कोटा जिले में नगरीकरण

सन् 2011 की जनगणना के अनुसार कोटा जिले में विभिन्न श्रेणियों के नगरों की कुल संख्या 36 है। जिसमें 13,22,219 नगरीय जनसंख्या निवास करती है। कोटा जिले में प्रथम श्रेणी (1,00,000 से अधिक जनसख्या वाला) नगर की संख्या 01 है जो जिला मुख्यालय कोटा शहर है यहां की जनसंख्या 10,01,694 है। द्वितीय श्रेणी (50,000 से 99,999) का कोई नगर नहीं है। तृतीय श्रेणी में (20,000 से 49,999) के 4 नगर (कैथून, इटावा, रामगंजमंडी तथा सांगोद) हैं। चतुर्थ श्रेणी में 6 नगर (सुल्तानपुर, खातौली, सुकेत, चैंचट, सातलखैड़ी, उदयपुरा) हैं। पचंम श्रेणी मे 10 नगर (मंडाना, दिगोद, पीपल्दा, अयाना, बड़ौद, बपावर कंला, कनवास, मोड़क कुम्भिकोट, जूल्मी) है। जिले में छटे प्रकार के 15 नगर हैं। तालिका संख्या 02 एवं मानचित्र संख्या 02 इस प्रकार तालिका सं. 02 से स्पष्ट है कि कोटा जिले में नगरों की संस्या में वृद्धि के साथ–साथ नगरीय जनसंख्या में भी वृद्धि की प्रवृत्ति पाई जाती है।

तालिका संख्या 02 कोटा जिले में तहसीलानुसार नगर एवं जनसंख्या – (2011)

तहसील का नाम	नगर	जनसंख्या
लाड़पुरा	कोटा	10,01,694
	कैथून	20,362
	मंडाना	8,558
	कसार	4,472
	बोरा बास	3643
	केवलनगर	3774
	भीमपुरा	4,423
	कुल –	**1,046,926**
दिगोद	सुल्तानपुर	16,684
	दिगोद	5005
	सीमस्या	4079
	बढ़ादील	3955
	निमोदा	4106
	नोताड़ा	4422
	कोटड़ादीप	3632
	कुल –	**41,883**
पिपल्दा	पीपल्दा	5143
	अयाना	5161
	बड़ौद	**5178**
	खातौली	10,159
	इटावा	26,741
	गेंता	4,802
	कुल –	**57,184**
संगोद	संगोद	21,846
	दुलेट	3,303
	बपावर कंला	7,170
	मोई कंला	4,229
	कनवास	8011
	आवां	4364
	देवली मांझी	4820
	मोरू कंला	3378

	कुल –	**57,524**
रामगंजमंडी	रामगंजमडी	41,328
	सुकेत	16,983
	चैचट	11,690
	मोड़क	9,204
	सलल खेड़ी	15,617
	कुम्भकोर	6,602
	उदयपुरा	10,051
	जुल्मी	7,257
		कुल – 1,18,732
कोटा जिला		**13,22,249**

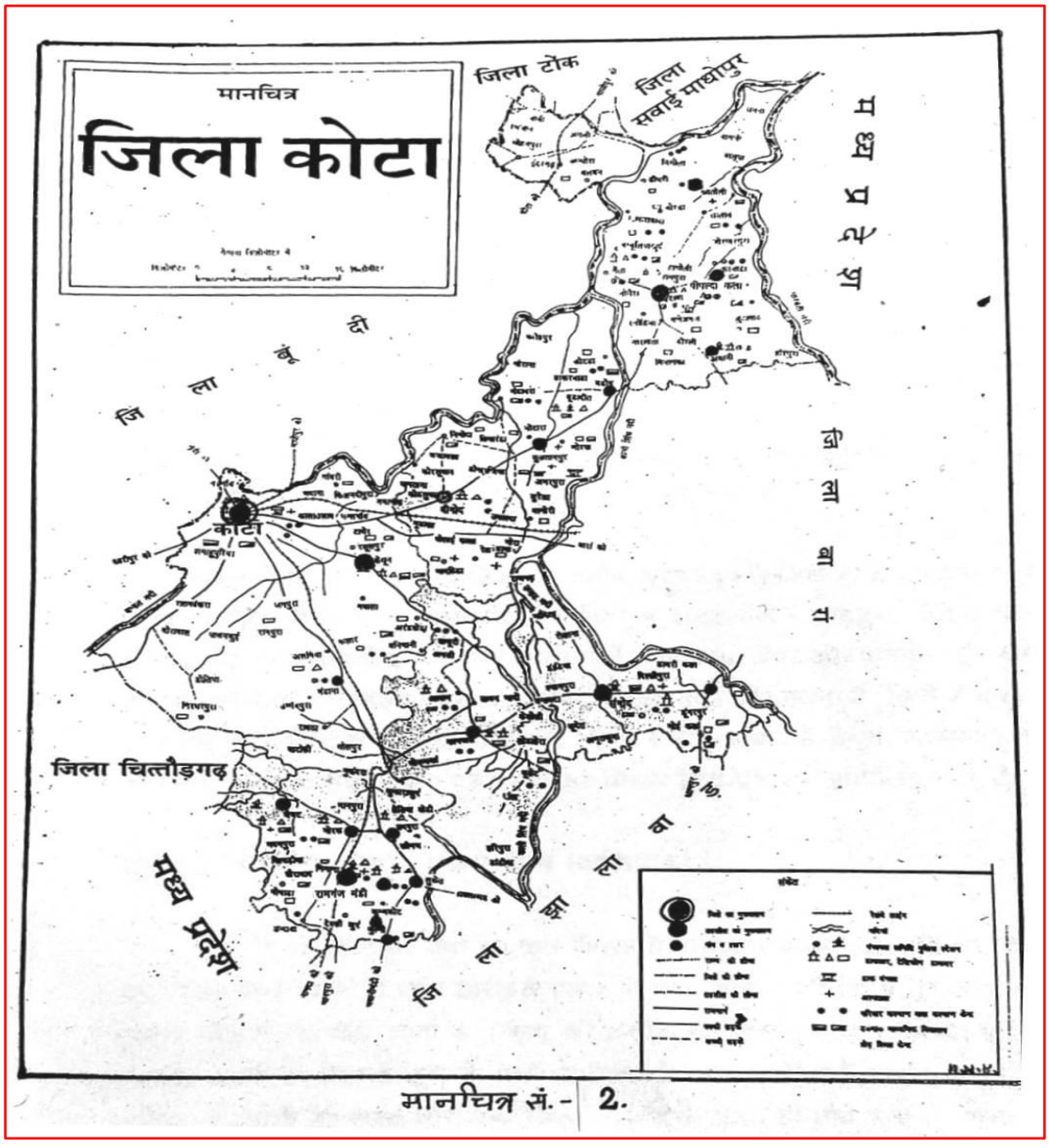

कोटा नगर की नगरीय अकारिकी

कोटा नगर का विकास मुख्यतः चम्बल के बीहड़ो में सुरक्षा व कृषि एवं पीने के पानी और अन्य कार्यों के लिए सदा वादिनी चम्बल नदी की उपलब्धता के कारण ही सम्भव हो पाया है। बेहतर भौगोलिक दशाओं, यातायात के साधनो व सम्पर्क मार्गों के विकास के कारण कोटा अधिक बेहतर ढंग से अन्य प्रदेशों से जुड़ गया और परिणाम स्वरूप विकास को गति प्राप्त हुई। शुरूआती समय में यहां औद्योगिक विकास ने बाहर से लोागों को आजीविका के लिए आकर्शित किया तो उद्योगों के तेजी से विकास हुआ और यह औद्योगिक नगर बन गया। वर्तमान में यह आज शैक्षणिक नगरी के रूप में पहचान बनाने में सफल हुआ है। जहां पूरे भारत से लाखों बच्चे पढ़ने आते हैं।

विकास की गति में कोटा नगर ने परकोटे में बंद अपनी आकारिकी की सीमाओं को तोड़कर पर कोटे के बाहर फैलाव किया है जिससे परकोटे के अदंर तंग गलियों, बाजारों व अवासों को एक खुली जगह प्राप्त होती चली गयी जिससे मुख्यतः गुमानपुरा, व एरोड्रम के आस पास के क्षेत्रों, स्टेशन क्षेत्र व मुख्य सड़क के दोनो और कुछ व्यवस्थित बाजारों का विकास हुआ। जो आज बड़े बड़े मोल के रूप में स्थापित हो चुके हैं। नगर के उत्तर में स्टेशन क्षेत्र से लेकर नगर के दक्षिण में महावीर नगर, आर.के.पुरम., श्रीनाथपुरम, कोटा विश्वविद्यालय तक व पूर्व में नया नोहरा, बोरखण्ड़ी से लेकर पश्चिम में चम्बल नदी के पार नान्ता क्षेत्र, बड़गाँव गोविन्दपुर बावड़ी तक फैल चुका है। प्रारम्भ में चम्बल नदी तथा दिल्ली–मुम्बई ब्राड गेज रेल्वे लाइन इस नगर को सीमाओं में बांधती थी और इसके बीच बीच मे नगर का विकास हुआ किन्तु चम्बल नदी पर बने नये पुलों के कारण तथा रेल्वे लाईन पर बने फ्लाई ओवर पुलों के कारण कोटा शहर का विस्तार फेलता जा रहा है। और आस पास के ग्रामीण क्षेत्र जोन नगर की सीमाओं आते जा रहें है। दक्षिण दिशा में कोटा नगर की सीमाओं बंधा धर्मपुरा, लखावा, रानपुर गावों को सम्मानित किया गया है। पूर्व में बोरखण्ड़ी गांव उत्तर में भदाना, रंगपुर गांव तथा पश्चिम में गिरधरपुरा गांवों को नगरीय सीमा में सम्मिलित करते हुए कोटा विकास प्राधिकरण बना दिया गया है।

सारांश समस्याऐं एवं सुझाव –

सारांश रूप में स्पष्ट है कि कोटा जिले में तथा कोटा शहर में निरन्तर नगरीकरण की प्रवृत्ति में निरन्तर वृद्धि हो रही है। राजस्थान का कोटा शहर अपनी विशेष परिस्थितियों के कारण दिनों दिन विकास करता जा रहा है और उसका विस्तार हो रहा है। कोटा मास्टर प्लान के अनुसार विस्तार के नये आयाम छू रहा है। कोटा शहर भारत सरकार की स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के तहत पर्यटन की दृष्टि से भी विकसित हुआ है किन्तु नगरीकरण के साथ–साथ नगरीकरण की समस्याएं भी देखने को मिलती है जैसे–

1. पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए होटल व ट्यूरिज्म से सम्बन्धित सेवाओं पर ध्यान नहीं रखा जा रहा है।
2. कोटा दिल्ली मुम्बई ब्रांड गेज पर स्थित है किन्तु कोटा जंक्शन के साथ उप स्टेशनों का विस्तार कम हुआ है।
3. कोटा शहर में हवाई सेवा का अभाव इसके विकास को अवरूद्ध कर रहा है।
4. चम्बल नदी में होने वाले प्रदूषण एक विकट समस्या का रूप ले रहा है।
5. भीड़–भाड़ वाले बाजारों में समुचित यातायात व पार्किंग की सुविधाओं का अभाव देखा जा सकता है।

सुझाव –

उपरोक्त समस्याओं के निराकरण हेतु निम्न सुझावों को सम्मिलित किया जा सकता है–

(i) पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्थर के होटल व ट्यूरिज्म से सम्बन्धित सेवाओं के अधिक विकास की आवश्यकता है।

(ii) कोटा के उपनगरीय रेल्वे स्टेशन के रूप में डकनिया तालाब व डाडदेवी स्टेशनों का विकास किया जाए तथा विस्तार किया जाए।

(iii) स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट में शामिल कोटा शहर में अन्तरिक स्थर के हवाई अड्डे की अत्यन्त आवश्यकता है। हालांकि इसके लिए राज्य सरकार निरन्तर प्रयासरत है।

(iv) अतिक्रमणों में रोक लगाकर कच्ची बस्तियों के विस्तार को रोके जाने की अत्यन्त आवश्यकता है।

सन्दर्भ सूची –

- बसंल, सुरेश चन्द्र (2009), 'नगरीय भूगोल' मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।
- मनोहर, राघवेन्द्र सिंह : 'राजस्थान के प्राचीन नगर व कस्बे' पत्रिका प्रकाशन।
- जोशी, आर.एल. (2014) 'नगरीय भूगोल' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- सिन्हा मुरली मनोहर प्रसाद (2012) 'नगरीय भूगोल' राजेश पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
- चौहान, तेज सिंह (1994) 'राजस्थान एटलस' भूगोल विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, विज्ञान प्रकाशन, जोधपुर
- Census of India Demographic Data of Kota City 2011
- City Profile, Kota Urban Improvement Trust (UIT) Kota Nagar Nigam.
- जैन, रंजना एस.एवं जैन शशि के. (1990) ''जनसंख्या अध्ययन'' रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर
- मौर्य, एस.डी. (2016) 'जनसंख्या भूगोल' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
- कोली, एच.एन. (1996) 'पर्यावरण एक मानव संसाधन' पॉइटर पब्लिशर्स जयपुर।